भूमिका

नया नियम की 27 पुस्तकों में से 13 पुस्तकें पौलुस के नाम हैं। उन में से चार पुस्तकें (1 तीमुथियुस; 2 तीमुथियुस; तीतुस और फिलेमोन) व्यक्ति विशेष को लिखीं। उनमें से 9 हाल ही में स्थापित हुई कलीसियाओं को लिखीं, ये कलीसियाएँ जो स्वयं पौलुस के द्वारा मिशनरी यात्राओं के दौरान स्थापित की गई थीं। भले ही यह लोग जो इन कलीसियाओं में शामिल हुए वे मसीही थे, वह अभी-अभी ही मूर्तिपूजा से बाहर आए थे। इसलिए उन्हें जो पहले विश्वास में आ चुके लोगों से अधिक शिक्षाओं की जरूरत थी। नई कलीसियाओं के लिए इन पत्रों में जो पौलुस ने उन्हें पवित्र आत्मा के द्वारा मार्गदर्शन किया (1 कुरिन्थियों 14:37), वह गहरी शिक्षा प्रदान की।

पौलुस के द्वारा स्थापित की गई सामान्य कलीसिया से बढ़कर थिस्सलुनीकियों की कलीसिया को अधिक शिक्षा की जरूरत थी। यहूदियों के द्वारा भड़काए गए सताव के कारण से जो बढ़ रही मसीही लहर का विरोध कर रहे थे, जो उसने सोचा था उससे पहले ही पौलुस को नगर छोड़ने पर विवश किया गया (प्रेरितों के काम 17:1-10)। पौलुस ने थिस्सलुनीकियों की कलीसिया को मसीही परिपक्वता में बढ़ने को जरूरी शिक्षा देने के लिए दो पत्र लिखे।

लेखक

आंतरिक प्रमाण

बाइबल अंश पुष्टि करता है कि 1 थिस्सलुनीकियों का पत्र पौलुस के द्वारा लिखा गया था (1:1; 2:18)। बाइबल अंश पौलुस की भाषा के लिए अनुकूल रूप से तुलना करता है। (देखें, उदाहरण के लिए, 1:2 की तुलना रोमियों 1:8 और 4:1, इफिसियों 6:10 और फिलिप्पियों 4:8 से तुलना करें।)

सीलास का नाम उस स्रोत में उचित बैठता है जो हमारे पास है (प्रेरितों के काम 17:4)। उसने थिस्सलुनीके की कलीसिया को स्थापित करने में पौलुस की सहायता की थी। जो तीमुथियुस के विषय कहा गया है वह भी प्रेरितों के काम और नया नियम में अन्य स्थानों पर भी मेल खाता है। (1:1 पर की गई चर्चा को देखें।)

बाहरी प्रमाण

परमेश्वर की प्रेरणा रहित स्रोतों के बाहरी प्रमाण इस पुस्तक के लेखक पौलुस की पुष्टि करते हैं।

क्लैमेंट ऑफ रोम, उदाहरण के लिए, 95 ईस्वी में लिखा, "हमें हर बात में परमेश्वर का धन्यवाद देना है।"[1] यह 1 थिस्सलुनीकियों 5:18 के अनुरूप है। अंताकिया के इग्नेशियस ने 110 ईस्वी में लिखा, "और तुम भी लगातार प्रार्थना करते रहो," और उसका यह उपदेश स्पष्ट रूप से 1 थिस्सलुनीकियों 5:17 से आता है।[2] मरसियोन के कैनन में, जो कि परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त पुस्तकों की एक सूची है, जो लगभग 140 ईस्वी में रचा गया, उसमें 1 थिस्सलुनीकियों पाया जाता है और उसमें पौलुस को इसका लेखक माना गया। मुरतोरियन हस्तलेखों के खण्ड में प्राप्त रोमी ग्रन्थ में, जो लगभग 170 ईस्वी में रचा गया, 1 थिस्सलुनीकियों पाया जाता है। 180 ईस्वी में इरेनियुस ने अपनी पुस्तक अगेंस्ट हैरसीस[3] में इस पत्री का उद्धरण (हवाला) दिया है।

200 ईस्वी से अनेकों ने 1 थिस्सलुनीकियों का उद्धरण दिया और पौलुस को इसका लेखक माना है। ऐसे केवल कुछ ही लोग हैं जिन्होंने पौलुस को इस पत्री के लेखक के रूप में नहीं माना है अतः इसे प्रेरणा प्राप्त पत्री माना जाना उचित होगा।

लेखक की पृष्ठभूमि

उसका जन्म

पौलुस का जन्म तरसुस के किलिकिया नगर में हुआ (प्रेरितों के काम 21:39; 11:25), यह एक व्यावसायिक नगर था जिसमें बहुत से यहूदी रहते थे। इस नगर में एक प्रसिद्ध पुस्तकालय था जिसकी मिस्र के अलेक्जेंड्रिया पुस्तकालय के साथ होड़ लगी रहती थी। इस नगर का एक जाना माना नागरिक था अथेनोडोसियुस जो सम्राट ऑक्टवेन अगस्त का मित्र था।

पौलुस का जन्म लगभग 1 ईस्वी से 10 ईस्वी के मध्यकाल में हुआ। 34-35 ईस्वी के लगभग जब स्तिफनुस पर पथराव हुआ तो लूका के द्वारा इसे एक "जवान" व्यक्ति के रूप में वर्णन किया (प्रेरितों के काम 7:58)। जब फिलेमोन की पत्री लिखी गई, लगभग 62-63 ईस्वी में, उसने स्वयं को "एक बूढ़ा व्यक्ति" कहा (फिलेमोन 1:9)।

उसका परिवार

जहाँ तक उसके परिवार का सम्बन्ध है, बिन्यामीन गोत्र से वह एक यहूदी था (फिलिप्पियों 3:5-8)। इब्रानी भाषा में उसे शाऊल कहा गया था और

यूनानी भाषा में पौलुस (प्रेरितों के काम 13:9)। उसका पिता रोमी नागरिक था (प्रेरितों के काम 22:25-29)। उसका परिवार काफी धनी परिवार रहा होगा ऐसा न होता तो वे कैसे पौलुस को यरूशलेम में पढ़ने के लिए भेज सकते थे (प्रेरितों के काम 22:3)।

उसकी पढ़ाई

विशिष्ट यहूदी घरों में, पुरुष सदस्य पाँच वर्ष की आयु से ही पुराना नियम को पढ़ना आरम्भ कर देते थे। पौलुस सम्भवतः तरसुस के यूनानी स्कूल में पढ़ने गया। नया नियम का बाइबल अंश यह संकेत करता है कि उसकी यूनानी लेखकों के साथ घनिष्ठ परिचय था। प्रेरितों के काम 17:28 में उसने एक क्रेते के नबी इपिमेनीडिस का वर्णन किया जिसकी मृत्यु 650 ई.पू. हुई थी। 1 कुरिन्थियों 15:33 में यूनानी नाटककार मेननडेर का वर्णन करता है जिसकी मृत्यु लगभग 300 ई.पू. हुई थी।

जब पौलुस किशोरावस्था में था उसे गमलीएल के पास पढ़ने के लिए भेजा गया था (प्रेरितों के काम 22:3; 5:34)।[4] वह अपनी पढ़ाई में बहुत होशियार था और यहूदी परम्पराओं के प्रति बड़ा उत्साही हो गया था (गलातियों 1:11-14)। फिलिस्तीन में उसने अरामी भाषा में बातचीत की; इसका अर्थ यह हुआ कि पौलुस इब्रानी, यूनानी और अरामी भाषाओं में बातचीत कर सकता था।

पौलुस के समय में एक रीति थी कि पढ़ाई के साथ ही साथ लड़के को कोई "व्यवसाय" सिखाया जाता था।[5] पौलुस को तम्बू बनाने का कार्य सिखाया गया था जैसा कि देखा गया है कि उसने अपने प्रचार कार्य में स्वयं की सहायता के लिए अपनी इस प्रतिभा का प्रयोग किया (प्रेरितों के काम 18:1-5)।

उसके सताव

पौलुस यहूदी मत के प्रति इतना निष्ठावान था कि वह कलीसिया को भयंकर सतानेवाला बन गया था। उसने मसीह को एक पाखण्डी के रूप में जाना। विशिष्ट यहूदी मसीह का आना एक "सैन्य नेता" के दृष्टिकोण से देखता था। यदि यीशु उनके मनपसंद के अनुसार का अगुवा होता तो उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया होता (देखें यूहन्ना 6:15)। जब मसीह उनके पूर्वचित्रित मसीह के रूप में फिट नहीं बैठा तो उन्होंने उसका तिरस्कार किया और उसके साथ वैसा ही बर्ताव किया जैसे वे यहूदी धर्म के किसी विधर्मी के साथ करते थे। आने वाले मसीहा के बारे में उनका विकृत दृष्टिकोण मसीह के तिरस्कार करने और कलीसिया को सताने की पृष्ठभूमि में नज़र आता है। इस सताव में पौलुस एक प्रधान व्यक्ति था।

उसका मनपरिवर्तन

पौलुस के मनपरिवर्तन की घटना नए नियम की सब घटनाओं में से अनोखी है। इस घटना का विवरण प्रेरितों के काम की पुस्तक में तीन अलग अलग स्थानों पर दिया है (9:1-19; 22:3-16; 26:9-18)। पौलुस अपनी यहूदी "पैत्रिक परम्पराओं" को मानने, सिखाने और रक्षा करने के लिए बहुत "उत्साही" था (गलातियों 1:11-14)। उसने बड़ी श्रद्धा से विश्वास कर लिया कि मसीही परमेश्वर के कार्य के लिए खतरा हैं (प्रेरितों के काम 23:1), और उसने वह सब कुछ किया जो उनके प्रयासों को निर्बल कर सकता था। दरअसल वह दमिश्क की राह पर मसीहियों को सताने के लिए जा रहा था जब प्रभु यीशु ने उसे "स्वर्ग से एक ज्योति" दिखाई जिसने उसे दृष्टिहीन कर दिया (प्रेरितों के काम 9:1-9)। तब यीशु ने उससे बात की और उसे समझाया कि उसके कार्य परमेश्वर को अप्रसन्न कर रहे थे। यीशु ने पौलुस को दमिश्क में जाने के लिए कहा जहाँ उसे बताया जाएगा कि उसे क्या करना है (प्रेरितों के काम 22:10)।

उसी दौरान, परमेश्वर ने पौलुस को अपना संदेश बताने के लिए हन्नयाह को भेजा, जिसमें यह सत्य भी था कि उसे बपतिस्मा लेना चाहिए (प्रेरितों के काम 22:16)। बपतिस्मा लेने के बाद पौलुस यरूशलेम गया जहाँ परमेश्वर ने उसे बताया कि वह जाए और अन्यजातियों को प्रचार करे (प्रेरितों के काम 22:17-21)। इस तरह से मसीहियों को सताने वाला इसका मुख्य समर्थक बन गया। पौलुस ने अपने मनपरिवर्तन के विषय यह कहते हुए बताया कि मसीह ने उसे "पकड़ा था" (फिलिप्पियों 3:12)। उसने अपने मनपरिवर्तन के एक अन्य उल्लेख में स्वयं को "अधूरे दिनों का जन्मा" हुआ बताया (1 कुरिन्थियों 15:8)।

प्रेरित के रूप में उसका जीवन

पौलुस ने अपने मनपरिवर्तन के बाद प्रेरित के रूप में अपने जीवन को दमिश्क में "बहुत दिनों तक" प्रचार करने के द्वारा आरम्भ किया (प्रेरितों के काम 9:23)। अपने प्राण को बचाता हुआ नगर से बाहर गया (प्रेरितों के काम 9:25), वह अरब में गया जहाँ मसीह ने उस पर सुसमाचार का और भी वर्णन प्रकट किया (गलातियों 1:11-17)। तीन वर्षों के बाद, वह यरूशलेम गया और पतरस और याकूब से मिला (गलातियों 1:18, 19)। यरूशलेम से तरसुस चला गया (प्रेरितों के काम 11:25) और सम्भवतः वहाँ पर कलीसिया की स्थापना की (प्रेरितों के काम 15:23)। उसके बाद अंताकिया की कलीसिया की अद्भुत उन्नति पर बरनबास ने विवश होकर सहायता के लिए शाऊल से सम्पर्क किया और उसे सेवा की उन्नति के कार्य और सुसमाचार प्रचार के लिए अंताकिया में लाया (प्रेरितों के काम 11:25)। अंताकिया में परिश्रम करने के बाद, उसे तीन

महत्वपूर्ण मिशनरी यात्राओं के लिए अंताकिया से भेजा गया (प्रेरितों के काम 13:1-21:17)। अपनी बुलाहट के और अपने कार्य की प्रकृति के कारण उसे "अन्यजातियों का प्रेरित" कहा गया (रोमियों 11:13; देखें प्रेरितों के काम 9:15; गलातियों 2:6-9)।

पौलुस और थिस्सलुनीके

पौलुस थिस्सलुनीके में लगभग 50-51 ईस्वी में अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान गया। थिस्सलुनीके यूनान के ऊपरी क्षेत्र में स्थित था (मानचित्र देखें "पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा" पृष्ठ 14 पर)। प्रेरितों के काम 17:1-9 उसके वहाँ जाने का और वहाँ पर उसके प्रचार के परिणाम का वर्णन करता है। इस नगर के आराधनालय में "तीन सब्त" तक किए गए प्रचार पर ध्यान दें (17:2)।

पौलुस की तीसरी यात्रा पर, इफिसुस के हुल्लड़ के बाद, वह मकिदुनिया की ओर चल गया (प्रेरितों के काम 20:1, 2)। भले ही वचन में थिस्सलुनीके का स्पष्ट रूप से वर्णन नहीं किया गया है, बाइबल अंश बताता है कि वह उस सारे देश में से होकर और भाइयों को उत्साहित करता हुआ वहाँ पहुँचा। निश्चित रूप से यह कहना सही होगा कि पौलुस उस क्षेत्र में थिस्सलुनीके में बिना ठहरे और उनको उत्साहित किए बिना वहाँ से नहीं गुजरा होगा।

थिस्सलुनीके: तब और अब

थिस्सलुनीके 315 ई.पू. में मकिदुनिया के राजा कासेंडर के द्वारा स्थापित किया गया था, जिसने इसका नाम अपनी पत्नी, "थिस्सलुनीके"[6] के नाम पर रखा। इसका विकास हुआ क्योंकि यह प्रसिद्ध इग्नेशिया मार्ग पर था जिस कारण नगर में पर्यटक आए और व्यापार आया, और उसमें एक अच्छा बंदरगाह भी था।

रोम ने 168 ई.पू. में थिस्सलुनीके को अपने अधिकार में ले लिया। उन्होंने मकिदुनिया को चार प्रान्तों में बाँटा और थिस्सलुनीके को दूसरे प्रान्त की राजधानी बनाया। फलतः यह नगर सारे मकिदुनिया का एक महानगर बन गया।

जब पौलुस वहाँ आया था तो यह स्वतंत्र नगर था जो सात शासकों के द्वारा शासित किया जाता था (एक शब्द जो प्रेरितों के काम 17:6 में "नगर के हाकिम" लिया गया है।) इन हाकिमों को रोमी राज्यपाल को जवाब देना होता था।

जब पौलुस वहाँ पर था तो वह तम्बू बनाने का कार्य करते हुए स्वयं को

प्रकट रूप से समर्थित करता था (1 थिस्सलुनीकियों 2:9)। यह उस तथ्य के साथ उचित बैठता है कि बकरी के बालों का कपड़ा जिससे उस समय तम्बू बनाए जाते थे "यह स्थानीय अर्थव्यवस्था का एक मुख्य भाग होता था।"[7]

नगर की आबादी में कुछ यहूदी भी थे (प्रेरितों के काम 17:1) परन्तु मुख्य रूप से वहाँ अन्य जाति के लोग ही रहते थे (देखें प्रेरितों के काम 17:4; 1 थिस्सलुनीकियों 1:9; 2:14)। जब पौलुस ने थिस्सलुनीके को छोड़ा था, नगर के यहूदियों ने उसे सताने के लिए बिरिया तक उसका पीछा किया (प्रेरितों के काम 17:13, 14)। थिस्सलुनीके में अधिकतर लोग यूनानी और कुछ रोमी लोग थे।

आधुनिक नगर बंदरगाह सुन्दर नगर है जिसमें लगभग 8,09,457 लोग हैं (2001 की जनगणना के अनुसार) जिसका नाम सालोनिका या थेसालोनिकी है। यह यूनान का दूसरा बड़ा नगर है। आज भी इसमें कपड़ा मिलें हैं, साबुन के कारखाने हैं और तम्बाकू बनाने के कारखाने हैं। आज की वर्तमान जनसंख्या में लगभग 50,000 यहूदी हैं जिनके पूर्वज 16वीं शताब्दी में पुर्तगाल और स्पेन से आए थे।

लिखने की स्थिति, समय और स्थान

अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान थिस्सलुनीके में कलीसिया स्थापित करने के बाद, यहूदी सताव ने पौलुस को समय से पूर्व ही जाने के लिए मजबूर किया (प्रेरितों के काम 17:1-10)। वह वहाँ मात्र तीन या चार महीने ही रहा।

वह वापस आकर उन लोगों को प्रभु यीशु में दृढ़ होने में सहायता करना चाहता था और प्रचार करना चाहता था, परन्तु रोक दिया गया (2:17, 18)। रुकावट यह थी कि यदि वह वहाँ वापस प्रचार के लिए आता तो व्यक्तिगत रूप से उनकी जान को खतरा था। कुछ लोगों ने इस बात से प्रमाणित करना चाहा कि वह उन लोगों से प्रेम नहीं करता था। परन्तु अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा में ही उसने उन लोगों के पास तीमुथियुस को अथेने से वहाँ भेजा (3:1-7)।

थिस्सलुनीके में कुछ समय रहने के बाद तीमुथियुस कुरिन्थुस में पौलुस के साथ आ मिला। जो समाचार वह पौलुस के पास लाया वह अच्छा ही था (1 थिस्सलुनीकियों 3:6, 7)। परन्तु पौलुस को यह बताया गया कि उन लोगों के मन में यीशु के दूसरे के आगमन को लेकर कुछ भ्रम हैं, इसलिए पौलुस ने कुरिन्थुस से उनके लिए थिस्सलुनीकियों की पहली पत्री लिखी। ऐसा विचार किया जाता है कि यह पत्र तीमुथियुस के कुरिन्थुस में वापस आने के तुरन्त बाद लिखा गया था।

यदि इस कलीसिया की स्थापना 50-51 ईस्वी में हुई, तो यह पत्र 51

ईस्वी में लिखा गया होगा। कुरिन्थुस में पौलुस का ठहरना इस शिलालेख से जुड़ा हुआ है जो 1909 में डैल्फी में पाया गया था जो पुष्टि करता है कि गल्लियो 52 ईस्वी के आरम्भ में कुरिन्थुस में आया था (देखें प्रेरितों के काम 18:12)। इस प्रमाण के आधार पर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि थिस्सलुनीकियों की पहली पत्री, कलीसिया को पौलुस के मिलने के लगभग 6 महीनों के बाद 51 ईस्वी में लिखी गई (2:17 से तुलना करें)। यह नया नियम के पत्रों में से लिखा गया पहला पत्र है। वास्तव में, यह मसीह की मृत्यु के 20 वर्ष बाद लिखा गया।

उद्देश्य और मूल विषय

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों के विश्वासियों को उनके सताव में सांत्वना देने के लिए (2:4-3:5), विपत्ति पर विजय पाने में उनके साथ आनन्दित होने के लिए (3:6-10), और उनके बीच में कुछ नैतिक ढिलाई को फटकारने के लिए यह पत्र लिखा (4:1-8)। परन्तु उनको दी गई स्वतंत्रता को समझते हुए, पौलुस का पत्री लिखने का प्रमुख उद्देश्य मसीह के आने के सम्बन्ध में फैली भ्रांतियों को दूर करना था (4:13-5:11)। वास्तव में, थिस्सलुनीकियों की पहली और दूसरी पत्री में एक चौथाई भाग की आयतें इसी विषय को समर्पित हैं।

पत्री के मुख्य विषयों में यह भी हैं: एक सच्चा परमेश्वर (1-9) जो तीन व्यक्तियों में अस्तित्व रखता है (1:5, 6; 4:8; 5:19), मसीह का प्रभुत्व (3:11, 12), क्रूस का परिणाम उद्धार है (4:14; 5:9, 10), पवित्रशास्त्र की प्रेरणा और अधिकार (2:13), विश्वासी की मसीह की साथ एकता (1:1; 5:5), पवित्रीकरण इसका सम्बन्ध व्यक्तिगत पवित्रता से है (4:3-8), स्वयं को भौतिक रूप से परिश्रम करने में बनाए रखना (4:11, 12; 5:12-15)।

रूप-रेखा[8]

I. आभार और बचाव (अध्याय 1-3)
   A. अभिवादन (1:1)
   B. थिस्सलुनीके के विश्वासियों के प्रति आभार (1:2-4)
   C. थिस्सलुनीके के विश्वासियों के चुने जाने का निश्चय (1:5-7)
   D. थिस्सलुनीके के विश्वासियों के उदाहरण का प्रभाव (1:8-10)
   E. थिस्सलुनीके में अपनी सेवा के प्रति पौलुस का बचाव (2:1-12)
      1. उसकी सेवा की सफलता (2:1-8)
      2. उसकी सेवा की सत्यनिष्ठा (2:9-12)

F. उसकी सेवा के प्रति थिस्सलुनीकियों की प्रतिक्रिया और संदेश (2:13-16)
G. पौलुस की उनमें स्थायी दिलचस्पी (2:17-20)
H. थिस्सलुनीके के लिए तीमुथियुस की सेवा (3:1-5)
I. तीमुथियुस के द्वारा लाए गए समाचार पर हर्ष (3:6-10)
J. पौलुस और सहकर्मियों की शुभकामनाएँ और प्रार्थनाएँ (3:10-13)

II. अतिरिक्त शिक्षा और प्रोत्साहन (अध्याय 4; 5)
A. पवित्र जीवन जीने के लिए प्रोत्साहन (4:1-8)
B. भाई चारे के प्रेम के लिए प्रोत्साहन (4:9-12)
C. मसीह के दूसरे आगमन सम्बन्धी शिक्षा (4:13-18)
D. मसीह के दूसरे आगमन के समय सम्बन्धी शिक्षा (5:1-11)
E. व्यावहारिक प्रोत्साहन (5:12-22)
F. विषयों का समापन (5:23-28)

अनुप्रयोग

अगुवे का अनुसरण करें

हम ऐसे जीवन कैसे चला सकते हैं जो दूसरों के लिए उपयोगी और लाभदायक हों? नए नियम की पुस्तकें हमें इस प्रश्न के उत्तर की सहायता के लिए दो दृष्टिकोण प्रदान करती हैं।

पहला, नया नियम हमें परमेश्वर का चित्र देता है। परमेश्वर ने यीशु को भेजा और हमारे लिए उसके सांसारिक जीवन का वर्णन सुसमाचार में दिया गया है। प्रभु यीशु परमेश्वर के तत्व की छाप है (इब्रानियों 1:3)। जब हम पढ़ते हैं यीशु ने क्या सोचा, कहा और मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना में क्या किया, हम देखते हैं कि परमेश्वर क्या सोचेगा, परमेश्वर क्या कहेगा, और परमेश्वर क्या करेगा।

दूसरा, नया नियम हमें परमेश्वर के लोगों का चित्र देता है। प्रेरितों के काम की पुस्तक दर्शाती है लोगों ने कैसे प्रत्युत्तर दिया जब उनको परमेश्वर के विषय सिखाया गया जैसे वह यीशु के जीवन में दर्शाया गया था। परमेश्वर चाहता था कि लोग उसे ढूँढे, उसको उत्तर दें और उसके मित्र बन जाएँ, और सुसमाचार के प्रचारकों ने सिखाया कि यही परमेश्वर की मंशा थी (देखें प्रेरितों के काम 17:26, 27)। उन्होंने यह भी सिखाया यह मित्रता पश्चाताप और आज्ञापालन से कैसे वास्तविक मित्रता बन सकेगी (देखें प्रेरितों के काम 17:30)। प्रेरितों के काम की पुस्तक भिन्न देशों, संस्कृतियों और विश्वास के लोगों के प्रत्युत्तर का वर्णन करती है जब उनके जीवनों की तुलना यीशु के जीवन के साथ की गई।

बहुत से लोगों ने अपने जीवनों को बदलने से मना कर दिया, परन्तु कुछ ने परमेश्वर के द्वारा प्रस्तुत की गई मित्रता को ग्रहण किया और वे मसीही बन गए। प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ने के द्वारा हम आज परमेश्वर के उद्धार के प्रस्ताव के प्रति सही प्रत्युत्तर को देख सकते हैं।

नया नियम के पत्र या पत्रियाँ, नए मसीहियों की सहायता के लिए लिखी गईं जब उनको परमेश्वर के चरित्र और स्वयं के बीच संघर्ष करना पड़ा। वे पुस्तकें हमें हमारे अपने स्वभाव और कलीसिया के अन्य लोगों के स्वभाव दोनों को समझने में सहायता कर सकती हैं। वे दर्शाती हैं कैसे परमेश्वर हमारे जीवनों में मसीहियों के रूप में कार्य कर सकता है और हमें व्यक्तिगत रूप से और परमेश्वर के लोग कलीसिया के रूप दोनों में कैसे फलवंत और प्रभावशाली बना सकता है।

थिस्सलुनीकियों की पहली पत्री मकिदुनिया के थिस्सलुनीके (आज इसे सालोनिका कहा जाता है) नगर के नए विश्वासी मसीहियों के लिए लिखी गई, यह नगर यूनान के उत्तर दिशा में स्थित है। पौलुस, सिलवानुस (या सीलास), और तीमुथियुस फिलिप्पी में प्रचार करने के बाद वहाँ गए थे और बिरिया, अथेने और कुरिन्थुस जाने से पहले। कुछ थिस्सलुनीके वासियों ने बड़े हर्ष से सुसमाचार का प्रत्युत्तर दिया। भले ही उनका उन लोगों के द्वारा अपमान किया गया जिन्होंने परमेश्वर के संदेश पर विश्वास करने से इनकार किया था (प्रेरितों के काम 17:1-9)। थिस्सलुनीकियों को लिखे गए दो पत्रों में पहला पत्र नए विश्वासियों को इन प्रचारकों के वहाँ से जाने के बाद लिखा गया। यह नए मसीहियों को विश्वासी बने रहने और परमेश्वर के साथ और अन्य लोगों के साथ सम्बन्धों में विकास लाने में सहायता करने के लिए लिखा गया।

यह पुस्तक हम शिक्षकों या प्रचारकों के लिए हमारे लोगों के साथ कार्य करने के तरीके सम्बन्धी विशेषकर संगी मसीहियों के साथ एक महत्वपूर्ण पाठ प्रस्तुत करती है। प्रभु यीशु का अनुसरण करने के लिए हम एक दूसरे को और हमारे परिवारों को कैसे सहायता कर सकते हैं?

यीशु के अनुसरण में पिछली उपलब्धियाँ। सबसे पहले जिस तरीके से लोगों को यह देखते हुए सहायता कर सकते हैं उनके जीवनों के लिए भली बात क्या है और उन्हीं भले गुणों के मूल्य पर हम जोर दे सकते हैं। लोगों के जीवनों में जो भली बात पाई जाए उसी के आधार पर भविष्य में उन्नति हो सकेगी। अक्सर, लोगों की उन्नति करने की कोशिश में, हम उन कार्यों और गुणों की अनदेखी कर देते हैं या कम ध्यान देते हैं जिन्हें परमेश्वर पहले ही से उनके जीवनों में मान्यता देता है। परमेश्वर चाहता है कि हम अन्य लोगों में उन बातों पर जोर दें।

इस दृष्टिकोण का प्रयोग 1 थिस्सलुनीकियों के लेखक के द्वारा किया गया

था। पत्र का आरम्भ परमेश्वर के साथ और एक दूसरे के साथ अच्छे सम्बन्धों को याद करने से हुआ जिसे इन लोगों ने कुछ महीने और अपने मसीही जीवनों के कुछ वर्ष पहले ही आरम्भ किया था (1:6, 9, 10)। पुस्तक का यह महत्वपूर्ण भाग पुस्तक के पहले पूरे तीन अध्यायों को समेटता है जो कि पुस्तक का लगभग आधा भाग है।

थिस्सलुनीकियों ने परमेश्वर का अनुसरण करने की महत्वता को जान लिया था और सुसमाचार को परमेश्वर के संदेश के रूप में मानकर विश्वास किया (2:13)। वे यीशु के द्वारा परमेश्वर के अनुयायी बन गए थे। उन्होंने यह भी महसूस किया कि परमेश्वर का अनुसरण करने की सहायता के लिए एक उपाय है कि अपने संगी मसीहियों के जीवनों को ध्यान से देखें और उनके द्वारा दर्शाए गए कार्य और व्यवहार को ग्रहण किया जाए। थिस्सलुनीके के लोग दूसरे धर्मी लोगों के उदाहरण का अनुसरण कर रहे थे (1:6; 2:14), और उनका भी धर्मी उदाहरण था जिसे दूसरे मसीहियों को अनुसरण करना था (1:7)। इन सब घटनाओं को बड़े हर्ष के साथ इस पुस्तक में याद किया गया था ताकि यह नए मसीही जान जाए कि उनके पिछले जीवन में क्या ईश्वरीय मान्यता थी और वर्तमान व्यवहार क्या हैं।

अच्छे कार्यों की सराहना दूसरों के साथ अच्छे सम्बन्धों को बनाए रखने का एक भाग है और यह उनकी उन्नति में सहायक है। जब अच्छे गुणों को अनदेखा कर दिया जाता है या उन्हें हल्के रूप में लिया जाता है, तो सम्बन्ध टूट सकते हैं और दूसरों की उन्नति में सहायता करने के हमारे प्रयत्न अवरुद्ध हो सकते हैं।

वे बच्चे जो अपने माता पिता से मात्र आलोचना ही सुनते हैं वे स्वयं को नालायक और अप्रिय महसूस करते हैं। परिणाम माता पिता/बच्चों के बीच का सम्बन्ध टूट जाता है; माता पिता की सलाह प्रभावहीन हो जाती है। इसके विपरीत, यदि बच्चों को अपने माता पिता की ओर से प्रेम का आश्वासन मिलता रहे और उनकी भलाई में उनकी रुचि दिखाई दे, तब वे अपने माता पिता की सलाह और उनके आदर्श पर अधिक ध्यान देते हैं। बच्चों को यह जानना चाहिए कि उनके माता पिता का आदेश उनकी प्यार भरे चिन्ता वाले हृदय से आते हैं। यह सोचने की बजाय कि उनके माता पिता उन पर हुक्म चलाना पसंद करते हैं, बच्चों को यह भरोसा करना चाहिए कि उनके माता पिता उनसे प्रेम करते हैं।

उसी तरह से, बड़े भी आलोचक और न्यायी के रूप में देखे जा सकते हैं इसके बजाय कि मित्र और भाई, यदि वे हमेशा ही उनसे आलोचना या हुक्म ही सुनते रहते हैं और उनके जीवन में चित्रण नहीं देखते हैं जो उनको सिखाते हैं। परमेश्वर का वचन हमें लोगों के जीवन में भली बातें देखने में सहायता कर

सकता है।

जब पौलुस ने फिलिप्पियों को लिखा, तो उसने उनको उन बातों पर विचार करने के लिए कहा जो बातें सत्य है, आदरणीय हैं, उचित हैं, पवित्र हैं, जो सुहावनी हैं, और जो मनभावनी हैं (फिलिप्पियों 4:8)। इस पत्र में थिस्सलुनीके में मसीहियों के लिए अपनी ही शिक्षा का अनुसरण करते हुए, उसने उनके जीवनों में इन गुणों का वर्णन किया और उनकी प्रशंसा की।

यीशु के अनुसरण में भविष्य की उन्नति। लोगों की सहायता करने का दूसरा उपाय भविष्य में मसीह में बढ़ने के महत्व पर जोर देना है। परमेश्वर संसार के लिए अपनी योजनाओं में हम में से प्रत्येक का उपयोग करना चाहता है। वह हमारा उपयोग करेगा यदि हम उसे हमारे जीवनों का मार्गदर्शन करने दें।

1 थिस्सलुनीकियों की पत्री में मसीहियों को परिपक्वता की ओर उनके अच्छे आरम्भ के द्वारा बढ़ने के लिए उत्साहित करने को इस दृष्टिकोण का प्रयोग किया गया। अध्याय 4 शब्द “इसलिए” से आरम्भ होता है यह इस कारण से नहीं कि पत्र समाप्त होने पर है, बल्कि लेखक भविष्य की उन्नति के लिए निर्देश दे रहा है जो बातें पहले उन्होंने प्राप्त कर लीं थीं (4:1, 10)। अन्तिम दो अध्याय नए मसीहियों को परिपक्वता की ओर बढ़ने में सहायता करने के लिए निर्देश देते हैं।

हमें अपने पापों से पश्चाताप करना है और प्रलोभन और झूठी शिक्षा से होने वाले खतरे को जानना है। परन्तु, मसीही परिपक्वता पाप को जान लेने और इससे दूर रहने से नहीं आती है। वास्तविक परिपक्वता तभी आएगी जब भले लोग पाप से दूर रहेंगे और जो उनके जीवन में पहले ही से भला है उस पर बनते जाएँगे और परिपक्व होने के लिए अपने अगुवे यीशु मसीह का अनुसरण करेंगे। लोगों की पहले की उन्नति के लिए उनका धन्यवाद करने के बाद, हम उन्हें परिपक्व होने का ढंग बताने के लिए परमेश्वर के वचन का प्रयोग करने की उनसे विनती कर सकते हैं।

प्रत्येक मसीही में उन्नति करने की क्षमता है। कई बार, लोग उन्नति करने का प्रयास नहीं करते; वे इस निष्कर्ष पर पहुँच जाते हैं कि उनको उन्नति करने की जरूरत नहीं है या वे उन्नति नहीं कर सकते। लोगों के प्रति इस तरह का व्यवहार रखने से शिक्षक इस बात के लिए दोषी ठहर सकते हैं। यदि हमारे विद्यार्थियों के प्रति इस तरह के विचार हैं, तो परिपक्वता के लिए उनकी सहायता करना असम्भव होगा।

फिलिप्पियों के विश्वासियों को लिखे अपने पत्र में, पौलुस ने लिखा, “और मुझे इस बात का भरोसा है, कि जिस ने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा।” (फिलिप्पियों 1:6)। उसी तरह

से, थिस्सलुनीकियों की उन्नति के लिए उसने चार बार धन्यवाद प्रकट किया और उन्हें “उन्नति करने के लिए,” “बढ़ने के लिए,” “और अधिक बढ़ने के लिए” और “मानने के लिए” उत्साहित किया (3:12; 4:1, 10; 5:11)। हमें बढ़ना है और अपने संगी मसीहियों की सामर्थ्य में आत्मविश्वास को प्रकट करना है।

हम में से प्रत्येक के लिए परमेश्वर की योजनाएँ हैं। नया नियम की पत्रियाँ इसके प्रमाण हैं। यह पत्रियाँ हम सब की बढ़ने में सहायता कर सकती हैं। एक बार जब हम दूसरे लोगों में मसीही जीवन के अच्छे आरम्भ को दर्शा देते हैं तो हमें उनकी बढ़ोतरी के लिए उनके जीवन में सक्षमता को ढूँढने के लिए कड़ा परिश्रम करना चाहिए।

उपसंहार। यदि हम कुछ मसीहियों के साथ ऐसा व्यवहार करें जैसे कि वे निकम्मे हैं क्योंकि हम उनके जीवनों में कुछ पाप देख सकते हैं, यदि हम उनके जीवनों में कुछ अच्छे कार्यों की सराहना करने की अनदेखी करते हैं, यदि हम सोचते हैं कि केवल परिपक्व लोग ही बढ़ सकते हैं तो हम 1 थिस्सलुनीकियों की पत्री पर ध्यान देने के द्वारा उनकी सहायता कर सकते हैं।

थिस्सलुनीके के विश्वासियों ने अपने अगुवे अर्थात यीशु का अनुसरण करने का बहुत बड़ा कार्य किया। हमारे विषय क्या है? क्या हमारा इरादा उसका अनुसरण करना है, अन्य लोगों के शब्दों से ऊपर उठकर उसकी सलाह को मान्यता दें, उसे अपने रोजाना के जीवन में उदाहरण के रूप में प्रयोग करें? थिस्सलुनीकियों के विश्वासियों ने अपने शिक्षकों के व्यवहार और कार्यों में यीशु को देखा। इससे उनके लिए यह सीखना आसान हो गया कि कैसे अपने स्वामी का अनुसरण करें। क्या हम उनकी प्रशंसा करके, और उन्हें देखकर सीखते हुए कि कैसे जीना है, अच्छे उदाहरण की तलाश करते हैं? क्या हमने अपने अगुवे का व्यावहारिक रूप से अनुसरण करने का निश्चय किया है उन बातों को देखने के द्वारा जिससे उसका जीवन दूसरों के द्वारा प्रदर्शित किया गया हो? क्या हम अच्छे कार्यों को दर्शाने के लिए दूसरे लोगों पर छोड़ने का प्रयास कर रहे हैं कि यीशु ऐसा करेगा? क्या हम पौलुस की तरह कह सकते हैं, “तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूँ” (1 कुरिन्थियों 11:1)? उसने कहा, “जो बातें तुम ने मुझ से सीखीं, और ग्रहण की, और सुनी, और मुझ में देखीं, उन्हीं का पालन किया करो, तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा” (फिलिप्पियों 4:9)। आइए हम इस तरह का जीवन व्यतीत करें ताकि हम यह बात कह सकें।

अपने अगुवे का अनुसरण करने का परिणाम क्या है? उसके साथ स्वर्ग में होना। एक विषय जो पूरे थिस्सलुनीकियों की पहली पत्री में है वह यीशु की वापसी है। इसका प्रत्येक अध्याय में वर्णन किया गया है (1:10; 2:19; 3:13; 4:14-17; 5:1-3, 23)। यीशु की वापसी पर गहन ध्यान इसलिए नहीं था

क्योंकि थिस्सलुनीके लोग इसके विषय नहीं जानते थे, न ही इस कारण से था कि उनके जीवनों में बदलाव लाने के लिए उनको भयभीत करने की जरूरत थी। इस बात पर जोर देने का मुख्य कारण यह था कि उन्हें अपने जीवन में एक सकारात्मक और परिपक्व दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता करें। वे यीशु के समान बनना और भविष्य में यीशु के साथ रहना चाहेंगे।

मसीह में अपने नए जीवन का थिस्सलुनीके के विश्वासियों ने एक अच्छा आरम्भ किया था। वे परिपक्वता की ओर जा सकते थे। इसका चरम उनके लिए अपने परमेश्वर की उपस्थिति में अनंतकाल तक वास करना होगा।

यीशु की वापसी की लगातार चेतावनी आशा का स्रोत था। इस अधूरे संसार में, मसीहियों का कभी भी स्थायी घर नहीं होगा। जी उठे यीशु में विश्वास करने का अर्थ है कि उसके साथ रहने के लिए और जो उसके अनुयायी है उनके साथ रहने के लिए हम यीशु के आने की बाट जोह सकते हैं। जो मर चुके हैं उनके लिए यह सत्य है उतना ही उनके लिए निश्चित है जो अभी भी जीवित हैं। जीवन के अन्त के लिए जोर देना तब यह मृत्यु नहीं है हम भले ही यीशु के आने से पहले मर जाएँ। 1 थिस्सलुनीकियों का जोर अनन्त जीवन पर है जो अभी आरम्भ हुआ है और जब वह वापस आएगा तो उसके साथ अनंतकाल में आनन्द होगा। हमें इस जीवन में और आने वाले जीवन के लिए अपने अगुवे का अनुसरण करना है। एक मसीही की महान आशा महिमा में यीशु का अनुसरण करना है। TP

समाप्ति नोट्स

[1]क्लेमेंट ऑफ रोम *1 क्लेमेंट* 38.4. [2]इग्नेशियस *इपिस्ट्ल टू दि इफीशियंस* 10.1. [3]इरेनियुस *अगेंस्ट हैरसीस* 5.6.1. [4]एफ. एफ. ब्रूस, *पॉलः अपोस्टल ऑफ दि हार्ट सैट फ्री* (ग्रैंड रेपिडस, मिशिगन: डब्लयूएम. बी. एर्डमैनस पबलिशिंग कम्पनी, 1977), 43; और एवरेट्ट फर्गुसन, *बैकग्राऊँडस ऑफ अरली क्रिश्चेनेटी*, दूसरा संस्करण (ग्रैंड रेपिडस, मिशिगन: डब्लयूएम. बी एर्डमैनस पबलिशिंग कम्पनी, 1993), 102-3. [5]फर्गुसन, 103. *टोस.* किद्दुशिन 1:11 में रब्बई टिप्पणियों को भी देखें। [6]डोनाल्ड एच. मैडविग, “थिस्सलुनीका,” *दि इंटरनेशनल स्टेंडर्ड बाइबल इनसाइकलोपीडिया* में, सम्पादक. जेफ्री डब्लयू ब्रोमले (ग्रैंड रेपिडस, मिशिगन: डब्लूएम. बी. एर्डमैनस पबलिशिंग कम्पनी, 1988), 4:837. [7]रोबर्ट एल. थोमस, *दि एक्पोसिटरस बाइबल कमैंट्री* में, “1 थिस्सलोनियन्स,” सम्पादक. फ्रैंक इ. गायबिलेन (ग्रैंड रेपिडस, मिशिगन: जोंडरवन, 1978), 11:230. [8]रेमंड सी. कल्की, *दि लैटर ऑफ पॉल टू दि थिलोनियनस*, दि लिविंग वर्ड कमैंट्री, वाल्यूम 13 (ऑसटीन, टेक्स.: आर. बी. स्वीट कम्पनी, 1968), 18-19 से ली गई ।

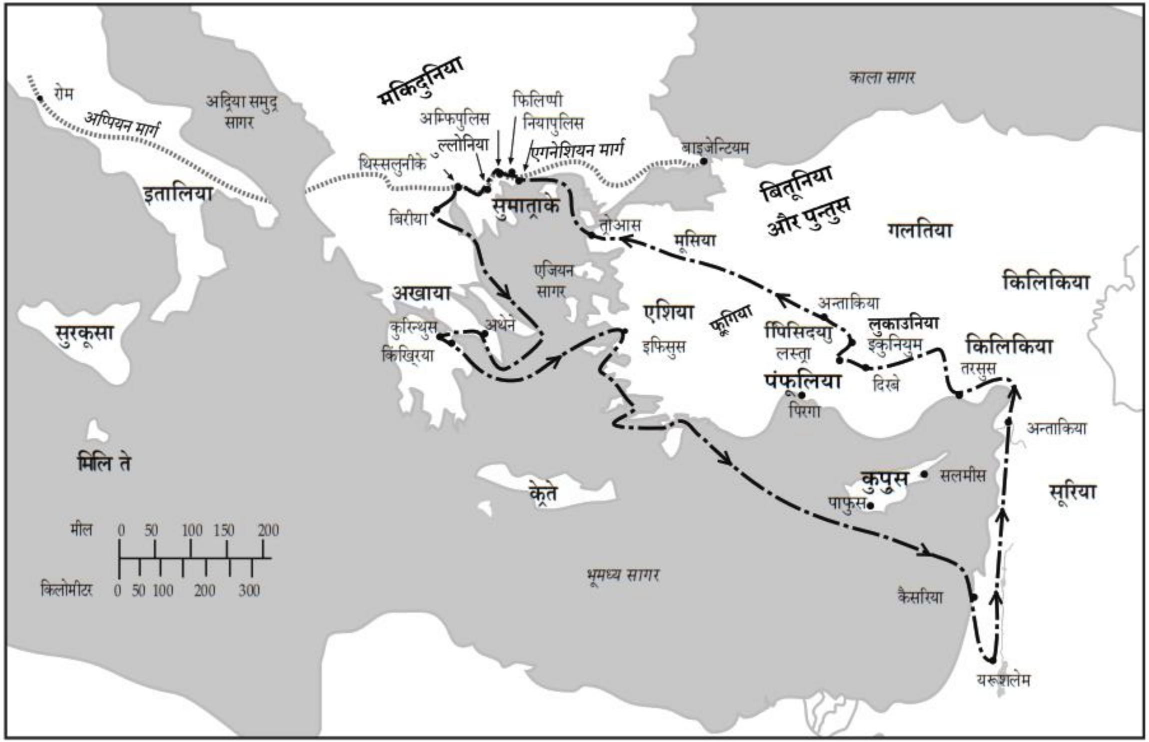

पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा